परमवीर चक्र का डिज़ाइन बनाने वाली सावित्री बाई पर विशेष लेख

सावित्री बाई खानोलकर ने भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार को डिज़ाइन किया था

3 नवंबर, 1947 को 100 जवानों का नेतृत्व कर रहे मेजर सोम नाथ शर्मा ने श्रीनगर हवाई अड्डे के पास पाकिस्तान के 700 पठान कबायिली आक्रमणकारियों के साथ युद्ध में आखिरी सांस तक बहादुरी से सामना किया। शर्मा और उनकी बटालियन (4 कुमाऊं) ने श्रीनगर के हवाई अड्डे (कश्मीर की जीवन-रेखा) के निकट पहुंच रहे आक्रमणकारियों को रोकने के लिए सही समय पर नई दिल्ली से उड़ान भरी थी।

शर्मा के आखिरी क्षण तक डटे रहने से सैनिकों को वहां पहुंचने का मौका मिला जिसने श्रीनगर को आक्रमणकारियों से बचाया और आखिरकार भारत के लिए कश्मीर घाटी को जीता। वह भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले परम वीर चक्र (पीवीसी) के विजेता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

बहुत कम लोग जानते हैं कि शर्मा के इस बहादुरी के कारनामे के दौरान परम वीर चक्र नहीं था। इसकी शुरूआत 26 जनवरी, 1950 को ही हुई थी जिसको हंगरी-रूस की एक महिला ने डिज़ाइन किया था। योन्ने माडे डे मारोज़ नामक इस महिला का जन्म स्विटज़रलैंड के न्यूचेटल में हुआ था।

1932 में 19 वर्षीय योन्ने सेना के अधिकारी विक्रम खानोलकर से शादी करने के लिए भागकर भारत आ गई थीं। योन्ने की विक्रम खानोलकर से मुलाकत इंग्लैंड में हुई थी जब वह वहां प्रशिक्षण के लिए गए थे तथा उनसे प्यार कर बैठीं। योन्ने ने उनके प्यार के साथ भारत की आध्यत्मिकता को भी अपनाया तथा अपने आप को हिंदू रीति रवाज़ों में ढालकर सावित्री बाई के नाम को अपनाया। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय से डिग्री ली। स्वतंत्रता के बाद सेना के एडजुटेंट जनरल मेजर जनरल हीरालाल अटल ने उनसे परम वीर चक्र पदक को डिज़ाइन करने को कहा।

In 1932, Yvonne Maday de Maros *(left)*, who took the name Savitri Bai Khanolkar later, came to India to marry army officer Vikram Khanolkar

सावित्री बाई खानोलकर का जन्म 20 जुलाई, 1913 को हुआ था। यह सम्मान अब तक केवल 21 भारतीयों को ही मिला है। शर्मा की तरह अधिकांश सैनिक युद्ध में शहीद हुए जिसमें 1962 में रेज़ांग ला में मेजर शैतान सिंह, 1971 में बसंतार में दूसरे लेफ्टिनेंट अरुण खेत्रपाल और 1999 में कारगिल में कैप्टन विक्रम बत्रा शामिल हैं।

सावित्री के सामने ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध वीरता पुरस्कार विक्टोरिया क्रॉस (जिसे 1885 में क्रिमिएन युद्ध के दौरान जीते गए रूस की तोप से बनाया गया था) का भारतीय प्रारूप बनाने की चुनौती थी। सावित्री ने हिंदु ग्रंथों का अध्ययन किया। उन्होंने इसके लिए वैदिक ऋषि (ज्ञानी) दधीचि के वज्र को चुना जिन्होंने बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए अपना बलिदान दिया। भयंकर राक्षस वृत्तासुर को मारने में देवताओं द्वारा मदद की मांग करने पर उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया था ताकि देवता उनके जांघ की हड्डी से घातक वज्र बना सकें। इस वज्र से इंद्र देवता ने व्रुतारासुर का वद्ध किया था।

परमवीर चक्र के अलावा सावित्री बाई खानोलकर ने महावीर चक्र, वीर चक्र और अशोक चक्र भी डिज़ाइन किया

मेजर जनरल हीरालाल अटल के कहने पर सावित्री ने जामुनी रंग की पट्टी के साथ यह पदक डिज़ाइन किया। पदक पर दधीचि के बलिदान का प्रतीक इंद्र वज्र के चार प्रतिरूप हैं। इन वज्र के बीच में अशोक चिह्न को दर्शाया गया है। यह पदक कांस्य का बना है।

भारत का पहला परमवीर चक्र प्राप्त करने वाले मेजर सोम नाथ शर्मा सावित्री बाई खानोलकर की बेटी के देवर थे। उन्हें यह पदक पूर्वव्यापी ढ़ंग से भारत के पहले गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रदान किया गया था। इसके साथ ही 1947-48 कश्मीर युद्ध के लांस नायक करम सिंह; दूसरे लेफ्टिनेंट आरआर राणे; नायक जादूनाथ सिंह; और हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। परमवीर चक्र के साथ सावित्री खानोलकर ने महावीर चक्र, वीर चक्र और अशोक चक्र को भी डिज़ाइन किया था। परमवीर चक्र देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न के बाद सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार समझा जाता है।

विक्रम खानोलकर मेजर जनरल के रूप में सेना से सेवानिवृत्त हो गए। उनकी मृत्यु के बाद सावित्री आखिरी समय तक रामाकृष्ण मिशन में नन रही। उनकी मृत्यु 1990 में हुई थी।

(यह जानकारी बिज़नेज़ स्टैंडर्ड में अजय शुक्ला के लेख से ली गई है।)